तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा राजस्थान प्रान्त के रेगिस्तानी जैसलमेर जिले में सन् 1957 से तेल एवं गैस की खोज का कार्य बहुत ही धीमी गति से चल रहा है। सन् 1957 से सन् 1968 तक जो खोज एवं ड्रिलिंग का कार्य किया, वह कोई दिलचस्पी से नहीं किया गया।, जैसलमेर जिले में मनहेरा टीबा नं० 1, 2, 3 और 8 में गैस प्राप्त हुई। तत्पश्चात् कार्य राजनैतिक कारणों से लगभग बन्द कर दिया गया है। दूसरी ओर पाकिस्तान में गैस की खोज का कार्य तीव्र गति से चला और उन्होंने सुई और मरी में गैस के अपार भंडार की खोज कर भी ली है और तीव्र गति से गैस निकालने का कार्य चल रहा है। सन् 1980–81 में पेट्रोलियम विभाग ने 3 करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान कर वैज्ञानिक सर्वेक्षण करना शुरू किया है, परन्तु कार्य की गति धीमी है। गैस आयोग के अधिकारी जबकि जैसलमेर में आयोग का अपना बड़ा कार्यालय होते हुए भी जोधपुर से तीन सौ किलोमीटर की दूरी पर कार्य संचालन कर रहे है।

अतः पेट्रोलियम मंत्री से निवेदन है कि वे जब कि देश मे गैस एव पेट्रोल की बड़ी कमी है और विदेशों से छः हजार करोड़ रुपयों का तेल आयात किया जा रहा है, इस रेगिस्तानी क्षेत्र मे पेट्रोलियम मंत्री महोदय विशेष दिलचस्पी ले कर तेल एव गैस की खोज का कार्य युद्ध स्तर पर करना शुरू करावे और ड्रिलिंग मशान उस क्षेत्र में तुरन्त भिजवाये। यदि तेल एव प्राकृतिक गैस आयोग अपनी लापरवाही के कारण खोज के कार्य मे दिलचस्पी नही लेता है, तो दूसरी ऐजेंसी से जिन्हें वे उपयुक्त समझें कार्य शुरू करा कर रेगिस्तानी क्षेत्र में एवं देश के विकास में महत्वपूर्ण योग दें।

(vi) BETTER UTILIZATION OF ENERGY.

SHRI HARIKESH BAHADUR (Gorakhpur): Sir, while there is a great crisis of energy in the country, a study conducted by the National Productivity Council has revealed that there is wreckless waste of energy in homes, industry, transport and agriculture sectors. Energy reserve of our country are getting drained out due to bad planning, outdated industrial equipment's lack of quality control on pumps and engines and primitive cooking stoves. Enormous amount of electricity and diesel are wested in the lift irrigation sector because of low efficiency of pump sets.

In Junjab alone over 100 million l tres of diesel per year is being wasted due to low efficiency and in other States the diesel pump sets require as much diesel as they are supposed to consume. It is also deplorable that the Indian Standards Institution does not prescribe minimum efficiency standard for these pumpsets. The NPC said one-fourth of the fuel oil now used in the industrial sector would be saved by improving 'housekeeping' measures in the industry and 30 per cent of the light diesel oil worth 150 million could be saved in Gujarat alone. If old boilers are replaced, there will be further saving of energy.

Fuel is being wasted in producing steam in the major industries, but, if high-pressure boliers are installed, steam and electricity both may be produced. Refineries, paper units, fertiliser and petro-chemical industries can use this 'total energy concept' to produce heat and power by saving fuel. The NPC also reminded that the bad planning has also caused energy wastage.

Therefore, Government should look into the total concept of energy production and utilisation so that this energy wastage may be stopped.